स्वदेश ग्वालियर समूह का प्रकाशन

समक्ष

ग्वालियर, 02 अगस्त रविवार 2020

पेज-2

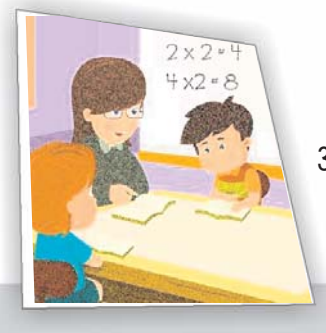

कहानी अलग - अलग मापदण्ड

पेज-3

रक्षाबंधन में आकर्षक मेंहदी से....

'स्वदेशी रक्षाबंधन'

रक्षाबंधन एक सामाजिक अवसर होता है पर इस बार का रक्षाबंधन हर मायने में अलग है। संक्रमण से बचने हमारे समक्ष कई चुनौतियां हैं, नागरिक जिम्मेदारियां हैं। ऐसे में कोरोना से बचने एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर रखना व जरुरतमंदों का सहयोग करना हमारा धर्म है। रक्षाबंधन पर कुछ लोगों के काम आना भी इस त्यौहार के आनंद को बढ़ा देगा।

हंसते हंसते कट जाएंगे रस्ते....। सदाबहार अभिनेत्री रेखा पर फिल्माया गया यह गीत कोरोना महामारी के समय हमें हिम्मत देता है। परेशानियों से लड़ने का हौंसला देता है। रक्षाबंधन का पावन पर्व भी इस बार हमें उम्मीदों और उमंगों की आस के साथ मनाना है। मार्च महीने से शुरु हुआ कोरोना का संक्रमण हमारे स्वाभाविक जीवन, मेलजोल, सामूहिक आयोजनों, तीज त्यौहारों सबको परेशान किए हुए है मगर हम 130 करोड़ धैर्यवान भारतवासी अपनी इच्छाशक्ति के साथ इन संघर्ष भरे दिनों का भी डटकर सामना कर रहे हैं। हम जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए को जीने वाले लोग हैं। अच्छी बात है कि सावन के रिमझिम महीने ने जब हम सबके मन की चिंताओं और तपिश को कम किया है तो अब रक्षाबंधन का पावन पर्व हमारे द्वारे आ पहुंचा है। भाई बहन के प्रेम, स्नेह और आत्मीयता का यह पावन पर्व हम सबके घर परिवारों को रोशन करने आया है।

सौ. महिमा तारे
(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

श्रावण मास की पवित्र पूर्णिमा पर पड़ने वाले रक्षाबंधन में इतना फीकापन हम सबने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। यह अधूरापन कोरोना के कारण है नहीं तो रक्षा बंधन आते ही हमारे मन भर वजन वाले मन हल्के हो जाया करते थे। इन त्यौहारों से एक निर्मलता घर आंगन में फैल जाया करती थी। मेंहदी, महावर चूड़ियों की खुशबू और खनक बिखर जाया करती थी पर इस बार ऐसा कुछ नहीं होने वाला है। त्यौहार की सजधज कम ही रहने वाली है। ऐसे समय में सुभद्रा कुमारी चौहान की राखी पर लिखी कविता याद आती है। पढ़कर लगता है इसी समय के लिए शायद उन्होंने यह कविता लिखी होगी।

मैं हूं बहन किंतु भाई नहीं है
है राखी सजी पर कलाई नहीं है
है भादो घटा पर छाई नहीं है
नहीं है खुशी पर रुलाई भी नहीं है।।

नहीं तो जब से त्यौहारों को समझने लगे है तब से हम बहनों का पूरा सावन का महीना राखी पर बने सुंदर-सुंदर गीतों को सुनकर ही गुजरता रहा है साथ ही इन गानों को सुनते-सुनते मायके की यादें ताजा हो जाती हैं। मां-पिता, भइया-भाभी, बहनों का प्यार, बचपन की सहेलियां, मायके की गलियां सब आंखों के सामने दृश्यमय होने लगता है और राखी के आते-आते तो मायके जाने की तीव्र हूक उठने लगती है। इन सबके बीच यदि मायके न जा पाएं ता कहीं जीवन में कुछ कम हो गया, रीत गया लगने लगता है। फिल्मी गानों के बोल भी तो ऐसे-ऐसे बनते रहे हैं कि उन्हें सुनकर मन मायके की ही गलियों में घूमने लगता, रमने लगता। सन् 1962 में आई फिल्म अनपढ़ का गाना जिसे लता जी ने गाया। उसके बोल हर रक्षाबंधन के दिन ताजे हो जाते हैं-

रंग बिरंगी राखी लेके आई बहना
राखी बंधवाले मेरे वीर
मैं न चांदी न सोने के हार मांगू
अपने भैया का थोड़ा सा प्यार मांगू।

बरबस ही इन दिनों होठों पर आने वाला गीत भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना भी लता जी ने ही गाया इसके साथ ही आज क ी

> *रक्षाबंधन का पावन पर्व भी इस बार हमें उम्मीदों और उमंगों की आस के साथ मनाना है। मार्च महीने से शुरु हुआ कोरोना का संक्रमण हमारे स्वाभाविक जीवन, मेलजोल, सामूहिक आयोजनों, तीज त्यौहारों सबको परेशान किए हुए है मगर हम 130 करोड़ धैर्यवान भारतवासी अपनी इच्छाशक्ति के साथ इन संघर्ष भरे दिनों का भी डटकर सामना कर रहे हैं। हम जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए को जीने वाले लोग हैं। अच्छी बात है कि सावन के रिमझिम महीने ने जब हम सबके मन की चिंताओं और तपिश को कम किया है तो अब रक्षाबंधन का पावन पर्व हमारे द्वारे आ पहुंचा है। भाई बहन के प्रेम, स्नेह और आत्मीयता का यह पावन पर्व हम सबके घर परिवारों को रोशन करने आया है।*

परिस्थितियों में लोकगीतों में महिलाएं राखी के गीत गा रही हैं।

राखी तीज है आई, मनड़ा में उठे हिलोर
मैं कैसे जाऊं पीहर, कोरोना मचाए शोर

इस त्यौहार को लेकर पौराणिक कथाओं में बहन के मायके जाने या भाई को बहन के घर जाकर राखी बंधवाने के महत्व को बताया गया है। दोनों ही परिस्थितियों में यदि किसी कारण से बहन-भाई के बीच मनमुटाव या गलतफहमी होने से अनबन हो भी गई तो भी यह त्यौहार उस पवित्र रिश्ते को वापस जीवित करने का पर्व है। निःसंदेह हर भारतीय त्यौहार के शुरू होने के पीछे कुछ न कुछ इतिहास अवश्य रहा है। ऐसा माना जाता है कि सबसे पहली राखी द्रौपदी ने श्रीकृष्ण को उस समय बांधी जब शिशुपाल का वध करते समय सुदर्शन चक्र से श्रीकृष्ण की उंगली से रक्त बहने लगा था तब द्रौपदी ने अपने आंचल से वस्त्र को फाड़कर कृष्ण की उंगली पर बांधा था। तब श्रीकृष्ण ने इस अपनेपन पर कहा था कि आज से मैं तुम्हारा ऋणी हो गया कल्याणी। श्रीकृष्ण ने तब द्रौपदी को प्रेम के इस बंधन को जीवन भर निभाने का वचन दिया था।

दूसरी एक और पौराणिक कथा भी रक्षाबंधन के संबंध में प्रचलित है। इस कथा के अनुसार राजा बलि श्रीहरि विष्णु भगवान के अनन्य भक्त थे। भगवान विष्णु राजा बलि की इस भक्ति को देखते हुए उनके राज्य की रक्षा करने की जिम्मेदारी खुद उठाने लगे और स्वधाम को छोड़कर राजा के महल में ही रहने लगे। लक्ष्मी जी को जब यह पता चला तो वे बलि राजा के दरबार में ब्राह्मण महिला के रूप में पहुंचीं और श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि से अपने पति को वापस ब्रह्म लोक ले जाने का आश्वासन ले लिया। तब से राखी पर भाई के घर जाकर राखी बांधने का महत्व है। रक्षाबंधन हमारे लिए जहां एक ओर पारिवारिक उत्सव है वहीं यह ऐसा सामाजिक उत्सव भी है जिससे जहां पारिवारिक रिश्ते तो सुदृढ़ होते ही हैं साथ ही लोक जीवन भी निखरता है। जब हम उन सब सम्माननीयों को रक्षासूत्र बांधते हैं जो अलग-अलग तरह से हमारे जीवन को सुखद और सुरक्षित बनाए हुए हैं चाहे वे सीमा की रक्षाओं के लिए खड़े देशभक्त सैनिक हों या पुलिस कर्मी, यातायात में सहायक हमारे भाई हों या विभिन्न क्षेत्रों में हमें सेवा देने वाले बंधु जैसे ऑटो रिक्शा चलाने वाले बंधु। हम सबके लिए इन सभी सहयोगियों को रक्षा सूत्र बांधकर कृतज्ञता प्रकट करने का भी रक्षाबंधन एक सामाजिक अवसर होता है पर इस बार का रक्षाबंधन हर मायने में अलग है। संक्रमण से बचने हमारे समक्ष कई चुनौतियां हैं, नागरिक जिम्मेदारियां हैं। ऐसे में कोरोना से बचने एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर रखना व जरुरतमंदों का सहयोग करना हमारा धर्म है। रक्षाबंधन पर कुछ लोगों के काम आना भी इस त्यौहार के आनंद को बढ़ा देगा।

इस त्यौहार पर हमें चीन का भारतीय सीमाओं पर अतिक्रमण के चलते चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए। रक्षाबंधन के समय हमें आत्मनिर्भर भारत का संकल्प गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की भी याद दिला रहा है। उन्होंने भी 1905 में बंगाल के विभाजन के समय बंग-भंग का विरोध करने के लिए रक्षाबंधन का सहारा लेकर लार्ड कर्जन का विरोध करने का निर्णय लिया था । तब उस समय लोग यह कहते हुए सड़कों पर उतरे कि-

सप्त कोटि लोफेर करुण क्रन्दन,
सुनेना सुनिल कर्जन दुर्जन।
ताई निते प्रतिशोध मनेर मतन करिल,
आमि स्वजने राखी बंधन।।

अर्थात इस रक्षाबंधन पर हम सभी संकल्प लें कि स्वाधीनता की यह ज्वाला हमारे मन में हमेशा जलती रहे और कर्जन रूपी प्रदूषित विकारों से हम हमेशा लड़ते रहें।

हम सब इस रक्षाबंधन पर स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करने में अपना सक्रिय और आत्मीय योगदान दें। रोजमर्रा के जीवन में चीन में बना सामान खरीदने से पहले स्वदेशी का विचार करें। राखी या तो घर पर ही बनाएं या अपने आस-पास जो राखी बना रहे हैं उनसे ही खरीदें। बहनें संकल्प लें कि आज हम राखी बांधेंगी तो अपने भाई के हाथ में भारत की हम रक्षाबंधन के आनंद में आत्मनिर्भर भारत का राग गाएंगे और उसे हृदय में जिएंगे। इन शुभ संकल्पों के साथ राखी का यह पावन पर्व हमारे घर परिवार, खेत खलिहान, संपूर्ण देश में एक आनंद और उल्लासपूर्ण वातावरण का संचार करेगा।

> रक्षाबंधन हमारे लिए जहां एक ओर पारिवारिक उत्सव है वहीं यह ऐसा सामाजिक उत्सव भी है जिससे जहां पारिवारिक रिश्ते तो सुदृढ़ होते ही हैं साथ ही लोक जीवन भी निखरता है।

> देशभक्त सैनिक हों या पुलिस कर्मी, यातायात में सहायक हमारे भाई हों या विभिन्न क्षेत्रों में हमें सेवा देने वाले बंधु जैसे ऑटो रिक्शा चलाने वाले बंधु। हम सबके लिए इन सभी सहयोगियों को रक्षा सूत्र बांधकर कृतज्ञता प्रकट करने का भी रक्षाबंधन एक सामाजिक अवसर होता है पर इस बार का रक्षाबंधन हर मायने में अलग है। संक्रमण से बचने हमारे समक्ष कई चुनौतियां हैं, नागरिक जिम्मेदारियां हैं। ऐसे में कोरोना से बचने एक-दूसरे से सामाजिक दूरी बनाकर रखना व जरुरतमंदों का सहयोग करना हमारा धर्म है।

> राखी या तो घर पर ही बनाएं या अपने आस-पास जो राखी बना रहे हैं उनसे ही खरीदें। बहनें संकल्प लें कि आज हम राखी बांधेंगी तो अपने भाई के हाथ में भारत की हम रक्षाबंधन के आनंद में आत्मनिर्भर भारत का राग गाएंगे और उसे हृदय में जिएंगे।

तूणीर

नवल गर्ग

रामजी की नगरी है न्यारी न्यारी

पांच अगस्त , बुधवार को भारत ही नहीं पूरे विश्व में रामजी के प्रेमी, अयोध्या में जन्मभूमि पर बनने वाले भव्य और दिव्य मंदिर के शिलान्यास समारोह की अत्यंत उत्साह व उल्लास के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं। कोरोना काल में सभी सावधानियों और उसके प्रोटोकॉल के कड़ाई से पालन के लिए कटिबद्ध रहते हुए अयोध्यावासियों का उत्साह भी चरमोत्कर्ष पर है । अयोध्या में साज सज्जा और अन्य तैयारियों को देखकर लग रहा है कि लाखों साल पहले रामजी के जन्म के समय जो ऐश्वर्य और वैभव इस तीर्थनगरी का था उसकी झलक सभी आधुनिक प्रतिमानों के साथ अवश्य देखने को मिलेगी।

मंगल मूल अमंगल हारी, सब शुभ विलसे हो तन धारी।
जन पद जन गण मन मुदकारी, पावन पुरुष हुए अवतारी।।

सबसे बड़ी बात यह है कि मंदिर निर्माण के होने वाले व्यय के लिए धनराशि जन-जन के उत्साहपूर्ण सहयोग से ही एकत्रित हो रही है। इसके लिए शासकीय कोष से कोई धन ग्रहण नहीं किया जा रहा है। और जनमानस का उल्लास और उमंग इतना अधिक है कि लगता है सभी जन सब कुछ समर्पित करने के लिए तत्पर हैं। यही महिमा है पावन राम नाम धारी मर्यादा पुरुषोत्तम , दशरथनन्दन , कौशल्यासुत भगवान् राम की। दशरथ जी के ज्येष्ठ पुत्र का नाम गुरु वशिष्ठ जी द्वारा *राम* ही क्यों रखा गया , इस रहस्य को महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण में बालकाण्ड के छठे सर्ग में उद्घाटित किया गया है।

दशत्रय दिवस पर गुरु ने, धरे शुभ नाम गुणकारी।
रमते सर्व जपी योगी, जिसमें ध्यान व्रतधारी।
उपासक सन्त साधक सब, मुनि ऋषि साधु जन जो ही।
पदार्थ रम रहे जिसमें, कहा श्री राम है सो ही ।।
उसी का चांद जो चमका, कहा श्री रामचन्द्र है ।
सर्व गुण सहित नर उत्तम, जन आर्य का इन्द्र है ।।
समय पर दैव लीला से, उन्हीं में दिव्य गुण आये।
कर्म से लोक भाषा में, गये श्री राम वे गाये ।।

(श्री वाल्मीकीय रामायणसार से उद्धृत)

केन्द्र सरकार और राज्य सरकार भी इस मंदिर निर्माण के लिए हर तरह का सहयोग करते हुए पूरे अयोध्या क्षेत्र और इसकी प्राणसंचरी सरयू के इठलाते जल भंडार को और अधिक स्वच्छ और निर्मल बनाने , घाटों को विस्तारित करके अधिक क्षमतावान् बनाने में जुटे हैं । यह धार्मिक नगरी भारत के श्रेष्ठतम स्मार्ट शहरों में भी अव्वल रहे ये प्रयास भी हो रहे हैं। फिर अयोध्या की सुंदरता भी इसी अनुरूप निखरेगी इसके लिए हम सब तैयार हो रहे हैं। आपसी सद्भाव, सौहार्द्र और भाईचारे की मिसाल भी बनेगी हमारी पावन धाम -- अयोध्या नगरी। आईए, हम सब मंगलगीत गाएं -- पावन अयोध्या नगरी के भाग्य और अपने सौभाग्य को सराहें कि हम इस देवनगरी के वैभव , ऐश्वर्य और आध्यात्मिक चेतनाओं को पुनर्स्थापित होते हुए देखेंगे और पूरे देश में इस शुभारंभ का स्वागत दीपावली मना कर करेंगे।

इधर ऐसी भव्य तैयारी इन अभूतपूर्व ऐतिहासिक क्षणों को जीवंत करने की और उधर बाल बबुआ - पपुआ जी और उनके सखावृंद बाल नोचने में जुटे हैं अपने और दलीय छुटभईयों के। समर्थन और विरोध की असमंजस के बीच नाथ सनाथ जी ने हनुमान जी को हाजिर नाजिर मानकर (सिर के ऊपर उनका चित्र बिठाकर) राम मंदिर के लिए समर्थन करते हुए कहा कि यह केवल भारत में ही सम्भव है, श्रीमान बंटाढार उसी तरह बोले जैसे उनके शिष्य बाल बबुआ जी बोलते हैं । पता ही नहीं लगता कि आखिर कहना क्या चाहते हैं तो दूसरी ओर म प्र में एक छुटभईये सज्जन जी फरमाते हैं कि राम जी के मंदिर के लिए शिलान्यास कार्यक्रम में मोदी जी का महिमा मंडन , उपचुनावों की तैयारी के मद्देनजर किया जा रहा है। धन्य है ऐसे विचारक -- जो असमंजस में डूबे हुए बेतुके बयान देने में माहिर हों ये तो बालबुद्धि पपुआ जी के दल को ही मुबारक हों ।

इधर राजस्थान का प्रहसन तो लंबा ही खिंचता जा रहा है। 14 अगस्त को विधानसभा सत्र की तैयारी, बाड़ेबंदी में विधायकों को बांधकर जयपुर से जैसलमेर भेजकर नये बाड़े में ठूंस

कर भी मन की बैचेनी जस की तस है। गहलोती चाचा की ईद और राखी में कोई स्वाद नहीं बचा। रह रह कर अंगुलियों पर संख्या का गणित ही दौड़ता रहता है सोते जागते एक ही दर्द, तीखी टीस -- अरे सचिना, बड़ा दुःख दीना रे तूने। मुझे इस बुढ़ापे में कहीं का नहीं छोड़ा।

और यों बबाल सुलझे न सवाल ।फिर भी नित फेंके जा रहे हैं नो बाल पर बाल । कुछ नये कुछ बासी ख्याल। मानो गोदाम से निकला हो एक्सपायरी डेट का माल ।ऐसे गहलोती चाचा का हो गया है बुरा हाल। रोज नये मुद्दे पकड़ा रहे हैं दूसरे खेमे के हाथ में मजबूत ढ़ाल। पायलट भैया अपने एकांतवास में हैं खुश, बिना बजाए गाल। जो उनको हिलाना चाहते थे वे खुद अपनी ही धुन पर कर रहे हैं कदमताल।

लोकतंत्र के खतरे में होने और हम ही उसके रक्षक हैं बाकी सब दुश्मन, यह दुहाई देकर सबको बनाने का जो लोग खुला खेल खेल रहे हैं वे ही परेशान होकर खम्बा नोचने में लग गये हैं कभी इहां तो कभी हुंआं। इधर बबुआ जी उड़ा रहे हैं ख्याली बफाल।

पर आ गया है अब हमारा रक्षक, हिंद गौरव रफाल। सो भले ही होते रहें उनके हाल बेहाल, हम सब तो मिलकर अपने घरों पर ही मनायें सारे त्यौहार- भर भर कर पकवानों के थाल।

(लेखक पूर्व जिला न्यायाधीश हैं।)

कहानी **नीरज त्यागी**

साधना जी के स्कूल में पढ़ने वाली छात्रा राधा जो उनके घर ट्यूशन पढ़ने के लिए आती थी वह बहुत देर से साधना जी और उनकी मित्र मंजली की बातें बहुत ध्यान से सुन रही थी। राधा के मन में रह-रह कर साधना जी की वही बातें गूंज रही थी जो साधना जी ने स्कूल में अन्य शिक्षकों से कही थीं। उसने स्कूल में भाषण के दौरान साधना जी का एक चेहरा देखा था और अब ट्यूशन के दौरान उनका कोई दूसरा ही चेहरा दिखाई दे रहा था।

अलग - अलग मापदण्ड

हर साल की तरह इस साल भी जैसे ही नए साल की पढ़ाई शुरू हुई। प्रिंसिपल मैडम साधना जी ने प्रार्थना स्थल पर खड़े होकर प्रार्थना के बाद अपनी स्पीच देना शुरू किया। उनकी स्पीच सभी बच्चों के लिए और स्कूल में पढ़ाने वाले सभी अध्यापकों के लिए थी। उन्होंने अपने सभी अध्यापकों और स्कूल में आए नए और पढ़ने वाले पुराने विद्यार्थियों को समझाते हुए अपनी बातों को उनके सामने रखना शुरू किया।

साधना जी ने बड़े ही प्यार से बच्चों को समझाया कि नए साल में सभी अपनी किताबों को ध्यान से पढ़ें और अपने भविष्य के लिए मेहनत से पढ़ाई करें। उन्होंने अपने अध्यापकों से अनुरोध किया कि बच्चों को इस तरीके से पढ़ाया जाए कि उन्हें किसी भी प्रकार के ट्यूशन की जरूरत ना पड़े। उनकी पढ़ाई की सारी परेशानी कक्षा में पढ़ाई के दौरान ही दूर की जाए और बच्चों के मां-बाप को ट्यूशन की फीस का अलग से खर्चा ना हो।

साधना जी ने अपने टीचरों को समझाया कि उन्हें इतनी लगन से पढ़ायें कि जैसे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। उनकी शिक्षा से बच्चे आगे बढ़ें और उन्हें किसी भी ट्यूशन की जरूरत ना पड़े। साधना जी सभी को अच्छी तरह से समझाइश देने के बाद अपने घर चली गयीं।

साधना जी घर पहुंचकर अपने रोजाना के कामों में लग गई। देखते-देखते शाम हो गई। घड़ी में पांच बजते ही एक-एक कर साधना जी से ट्यूशन पढ़ने के लिए बच्चे आने लगे। साधना जी ने उनको पढ़ाना शुरू किया, बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते उन्हें समझा रही थी। तभी उनकी मित्र मंजली वहां आयी और अपने बेटे को ट्यूशन पढ़ाने के लिए कहने लगी। चूंकि वे और साधना जी बहुत समय बाद मिले थे तो काफी देर तक बात चलती रही। बातों-ही बातों में साधना जी बोली देखो मंजली आजकल स्कूलों में कितनी भी अच्छी पढ़ाई क्यों न हो लेकिन ट्यूशन की जरूरत तो पड़ती ही है। ट्यूशन तो बहुत ही जरूरी हो गया है। बिना ट्यूशन के बच्चे उतना अच्छा नहीं पढ़ सकते हैं... जितना ट्यूशन के साथ बच्चे सीखते हैं।

साधना जी के स्कूल में पढ़ने वाली छात्रा राधा जो उनके घर ट्यूशन पढ़ने के लिए आती थी वह बहुत देर से साधना जी और उनकी मित्र मंजली की बातें बहुत ध्यान से सुन रही थी। राधा के मन में रह-रह कर साधना जी की वही बातें गूंज रही थी जो साधना जी ने स्कूल में अन्य शिक्षकों से कही थीं। उसने स्कूल में भाषण के दौरान साधना जी का एक चेहरा देखा था और अब ट्यूशन के दौरान उनका कोई दूसरा ही चेहरा दिखाई दे रहा था।

उधर साधना जी की अपनी मित्र मंजली से वार्तालाप जारी था.. कि राधा ने साधना जी से पूछ ही लिया- आप स्कूल में सभी शिक्षकों को तो बोल रही थी कि बच्चों को इतना अच्छे पढ़ाना चाहिए कि उन्हें अलग से ट्यूशन पढ़ने की जरूरत ही न पड़े.. और आप इन आंटी से बोल रही हो कि ट्यूशन भी जरूरी है। यदि ट्यूशन जरूरी है तो आपने स्कूल में क्यों कहा कि ट्यूशन की जरुरत नहीं होनी चाहिए? इससे पहले कि राधा और कुछ कह पाती मैडम ने उसे चुपचाप अपना कार्य करने के लिए कह दिया। अपने बाल मन में सवाल लेकर राधा चुप तो हो गई लेकिन उसके शिक्षक का यह दोहरा रूप उसके मन में हजारों सवाल लेकर कौंधता रहा।

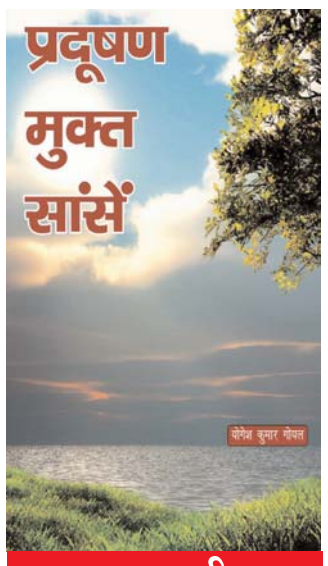

पुस्तक समीक्षा

प्रदूषण मुक्त सांसें: पर्यावरण की महत्ता बताती जरूरी किताब

हाल के सालों में यह पहला ऐसा मौका है, जब पिछले कुछ महीनों में दुनिया के बिगड़ते पर्यावरण और प्रदूषण की किसी गहराती समस्या ने हमारा ध्यान नहीं खींचा। शायद इसकी वजह यह है कि दुनिया पिछले कुछ महीनों से कोरोना संक्रमण के चक्रव्यूह में फंसी हुई है, नहीं तो कोई ऐसा महीना नहीं गुजरता, जब बिगड़ते पर्यावरण की बेहद चिंताजनक और ध्यान खींचने वाली कोई खबर दुनिया के किसी कोने से न आती हो। वास्तव में 21वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी या आतंकवाद नहीं है। इनसे भी बड़ी समस्या हर तरह का बढ़ता प्रदूषण है, जिसके कारण धरती पर लगातार विनाश का खतरा मंडरा रहा है।

वरिष्ठ पत्रकार और सम-सामयिक राजनीतिक विषयों के प्रिंट मीडिया में लोकप्रिय विश्लेषक योगेश कुमार गोयल की हाल में आयी बहुचर्चित किताब 'प्रदूषण मुक्त सांसें' वास्तव में धरती की इसी विराट समस्या को संबोधित है। वास्तव में पर्यावरण किसी एक देश, एक समाज या एक इलाके की समस्या नहीं है। इसकी जद में पूरी दुनिया है। इसीलिए श्री गोयल की इस किताब का नजरिया वैश्विक है। किताब में 19 अध्याय हैं। ये सभी अध्याय वास्तव में दुनिया की विराट प्रदूषण जनित समस्या को एक नजर में देखने का उपक्रम हैं। इस तरह देखा जाए तो हिन्दी अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित उनकी 190 पेज की इस किताब में धरती की समस्त पर्यावरणीय समस्याएं एक क्रम में मौजूद हैं। इसलिए अगर विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए इसे गागर में सागर कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

किताब में मौजूद हर अध्याय वास्तव में प्रदूषण की किसी समस्या या उससे पैदा हुई स्थिति का चित्रण है। किताब के पहले अध्याय 'प्रकृति की मूक भाषा को समझें' में दुनिया का ध्यान इस तरफ खींचा गया है कि धरती में रह-रहकर जो उथल-पुथल की कुदरती घटनाएं घट रही हैं, उनके पीछे छिपे संकेतों को समझें। ये धरती में इंसान की ज्यादती का नतीजा हैं। किताब का यह अध्याय बताता है कि आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण में कहां हमने कुदरत की नैतिक सरहद का उल्लंघन किया है, जिसके नतीजे हमारे सामने हैं। किताब का दूसरा अध्याय वायु प्रदूषण को समर्पित है, जो वास्तव में मौजूदा दौर का सबसे बड़ा प्रदूषण संकट है। हर साल दुनियाभर में 20 लाख से ज्यादा लोग जहरीले वायु प्रदूषण के कारण मौत के घाट उतर जाते हैं। वायु प्रदूषण हाल के सालों में सामने आयी प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या है, जिसके चलते सिर्फ इंसान ही नहीं, हरी-भरी प्रकृति की भी सांसें थम सी रही हैं।

किताब में जल प्रदूषण, खासकर जल-स्रोतों पर गहराते प्रदूषण की समस्या को भी बारीक निगाहों से देखा गया है। इसी क्रम में ध्वनि प्रदूषण पर भी किताब में बहुत ही सरस सामग्री है। बेलगाम उपभोग के चलते संकट का सबब बने प्लास्टिक की विनाशकारी भूमिका को भी लेखक ने बड़े विस्तार और गंभीरता से अपनी किताब में समेटा है। इस मायने में भी यह किताब खास है क्योंकि इसमें अकादमिक रूखाई नहीं है। चूंकि लेखक बहुत सारे विषयों का जानकार है, इसलिए भी किताब में जबरदस्त जानकारियों के साथ-साथ एक रोचक पठनीयता है।

किसी पत्रकार की गंभीरता से लिखी गई किताब इसलिए भी दूसरे लेखकों से ज्यादा उपयोगी होती है क्योंकि इसे न केवल सहजता से पढ़ा जा सकता है बल्कि आसानी से गहराती प्रदूषण की समस्या को बिना किसी बौद्धिक आतंक के समझा जा सकता है। जबकि बड़े-बड़े अकादमिक विशेषज्ञों की लिखी गई किताबें इस पैमाने पर खरी नहीं उतरतीं। योगेश कुमार गोयल एक सक्रिय लेखक हैं और देशभर के विभिन्न समाचारपत्रों में करीब-करीब उनके हर दिन महत्वपूर्ण लेख छपते हैं, उन्हें लेखन का लंबा अनुभव है। इसलिए उनकी किताब में लंबे-लंबे अनावश्यक और उबाऊ विवरण कतई नहीं हैं, जो आमतौर पर पाठकों के लिए किसी किताब को पढ़ने की सबसे बड़ी बाधा होते हैं।

'प्रदूषण मुक्त सांसें' इतनी रोचक और सरल जुबान में लिखी गई है कि इसे कोई भी सामान्य पाठक पढ़कर अच्छे पर्यावरण का महत्व और प्रदूषण की गहराती समस्या को समझ सकता है। प्रस्तुत किताब पिछले कुछ महीनों से मीडिया में काफी चर्चा में है। 'मीडिया केयर नेटवर्क', नजफगढ़, नई दिल्ली-110043 से प्रकाशित इस किताब को अमेजन डॉट इन से खरीदा जा सकता है।

पुस्तक: प्रदूषण मुक्त सांसें
लेखक: योगेश कुमार गोयल
पृष्ठ संख्या: 190
प्रकाशक: मीडिया केयर नेटवर्क, 114, गली नं. 6, एमडी मार्ग, नजफगढ़, नई दिल्ली-110043
मूल्य: 260 रुपये
समीक्षक: लोकमित्र

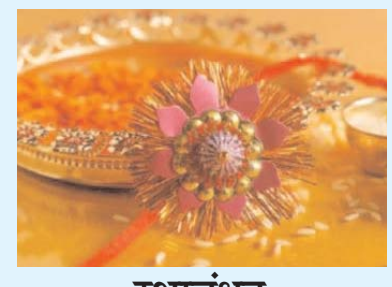

लघुकथा
राजकमल सक्सेना

भूख का भ्रमण

महामारी और भुखमरी के दौरान गगनचुंबी इमारतों से गुजरते हुए 'भूख' का भ्रमण जारी था।

इमारतों के रहवासियों से उपेक्षित होकर, भूख ने अपना रुख आम आदमी की ओर निचली बस्तियों की ओर किया। यहां उसे कुछ राहत मिली। लोग एक –एक रोटी के लिए तरस रहे थे। जहां थी वहां परस्पर लोग झगड़ रहे थे। थोड़ा और आगे जाने पर भूख की खुशी का ठिकाना नहीं था। गरीबी और कुपोषित, नरकंकालों में तब्दील होते नंग–धड़ंग बच्चों के बीच अब भूख का तांडव जारी था।

अट्टहास करती भूख के पैर अब महामारी के साथ–साथ पसरते ही जा रहे थे।

* **राजकमल सक्सेना**

व्यंग्य
सुनील सक्सेना

आदमी के अंदरवाला जानवर

मैंने मेल खोली तो देखा बलवंत के बेटे की शादी का कार्ड है। दिमाग ठनका। देव तो सो गये हैं। अब तीन महीने तक नो शादी। नो बैंड बाजा बारात। पर शादी का कार्ड वो भी मेल से। भई दो गज की दूरी ही तो मेंटेन करना है। हम कौन से परदेस में रहते हैं, एक ही शहर तो हैं। घर आकर भी कार्ड दे सकता था। मैं उलझन में था कि ऐसी क्या विपदा आन पड़ी कि बलवंत आनन फानन में बेटे की शादी कर रहा है।

श्रीमती जी ने काढ़े का गिलास मुझे थमाया और लगीं पिनपिनाने - सुबह हुई नहीं कि मोबाइल पर सीधे हाथ जाता है आपका।

अरे! देखो तो सही। बलवंत के बेटे की शादी का कार्ड आया है। मैंने कहा

फंस गई होगी कोई मालदार पार्टी। दहेज के चक्कर में लड़का बुढ़ा गया। पर एक बात तो मेरी भी समझ नहीं आ रही है कि हम बलवंत के कब से इतने करीब हो गये कि हमें निमंत्रण भेजा है।

श्रीमतीजी का सोचना सही था। सरकार ने बराती-घराती मिलाकर पचास का कोटा फिक्स कर दिया है। यानी हम पचास में शामिल थे । मन खुशी से उछालें मारने लगा। वेडिंग कार्ड डाउनलोड किया तो दर्शनाभिलाषी में बेटी-दामाद के नाम के साथ एक नाम 'रॉकी' लिखा था। जहां तक मुझे मालूम है बलवंत के एक बेटा और एक बेटी है। बेटी की शादी हो गई है और उसके बेटे का नाम मेले मामा की शादी में जलूल-जलूल आना में दिख रहा था। पर दर्शानाभिलाषी में ये रॉकी नाम मेरे लिये अपरिचित था।

मैं बलवंत के रॉकी के प्रति अगाध प्रेम पर कुर्बान हो गया। जानवर का ऐसा मानवीकरण मैंने पहले कभी न देखा न सुना। मुझे अचानक युधिष्ठिर और उनका श्वान याद आ गये, जिसे वे अपने साथ स्वर्गलोक तक ले गये थे, पर इंद्र ने एंट्री नहीं दी। शादी के कुछ दिनों बाद बलवंत की एक और मेल आई। खोला तो शोक संदेश था। नई नवेली बहू की उठावनी का संदेश। इस बार शोक संदेश में रॉकी का नाम नदारद था।

चंदा हमारी काम वाली बाई है। मल्टी फंक्शनल है। सबकी खबर ले और सबकी खबर दे। सदैव चौकन्नी। मुस्तैद। मेरे प्रश्न का उत्तर दन्न से चंदा ने दिया- रॉकी, बलवंत साहब के कुत्ते का नाम है।

मैं चौंका कुत्ते का नाम स्वागतातुर में। हद हो गई। ठीक है बलवंत को प्यार होगा रॉकी से, पर अतिथियों का स्वागत, वो भी कुत्ते से।

चंदा ने बलवंत और रॉकी के याराने का रहस्य खोलते हुए बताया - बलवंत साब भौत मानते हैं रॉकी को। पूजा पाठ हो, बर्थडे हो, होटल में पार्टी हो रॉकी के बिना कोई प्रोग्राम नहीं होता। घर का मेम्बर है रॉकी।

मैं बलवंत के रॉकी के प्रति अगाध प्रेम पर कुर्बान हो गया। जानवर का ऐसा मानवीकरण मैंने पहले कभी न देखा न सुना। मुझे अचानक युधिष्ठिर और उनका श्वान याद आ गये, जिसे वे अपने साथ स्वर्गलोक तक ले गये थे, पर इंद्र ने एंट्री नहीं दी।

शादी के कुछ दिनों बाद बलवंत की एक और मेल आई। खोला तो शोक संदेश था। नई नवेली बहू की उठावनी का संदेश। इस बार शोक संदेश में रॉकी का नाम नदारद था।

मुझे सीक्रेट एजेंट चंदा का इंतजार था। मेरे मुंह से बलवंत शब्द निकला ही था, चंदा बताने लगी-बहू कैसे मरी मालूम नहीं साब। जितने मुंह उतनी बातें.. घर में बहू से रोज झगड़ा होता था, कोई ऊंचे मॉडल की कार चाहिए थी बलवंत साब के बेटे को। अब आदमी को जानवर बनने में टैम कहां लगता है साब। एक रात ऐसी सोई कि फिर उठी नहीं। उसी दिन रॉकी घर छोड़कर चला गया।

मेरे कानों में उस रात कुत्ते के रोने की आवाज गूंजने लगी । शायद रॉकी ही था। कहते हैं कुत्ते मौत की आहट सुन लेते हैं। उन्हें यमराज दिखने लगते हैं। काश कोई सुन लेता रॉकी की आवाज। जानवर ने सीख ली इंसानियत हमसे। हमारे अंदर का जानवर अभी तलक जिंदा है, मरता ही नहीं।

काव्य कोना

रक्षाबंधन

सावन की यह पूर्णिमा, ले अनुपम उपहार।
चिरंजीव करने चली, भाई -बहन का प्यार।
नभ में छितरी चाँदनी, चंद्र मेघ की ओट।
और फुहारें कर रहीं, मीठी - मीठी चोट।
हर बंधन से श्रेष्ठ है, राखी का अनुबंध।
रक्षक रक्षित मध्य में, हुई मौन सौगंध।
रंग - बिरंगी राखियों, से सजते बाजार।
डोरी सूती रेशमी, नेह जनित उपहार।
बाँध लता की राखियाँ, भाई- वृक्ष के हाथ।
निज रक्षा का ले रही, वचन धरा तरु साथ।
पगी - पगाई प्रेम में, राखी कवच कठोर।
बस निर्भयता बाँटती, जीवन में चहुँ ओर।
अक्षत से अक्षत करूँ, भैया का सौभाग्य।
माथे की कुमकुम हरे, जीवन से दुर्भाग्य।।
प्रेम विविध संसार में, रक्षाबंधन और।
नोंक- झोंक के बीच में, है जीने का तौर।
चहक उठी अमराइयाँ, और आँगन दीवार।
बचपन की यादों सहित, आईं बहनें द्वार।
फिर से लौट अतीत में, झूले सँग मल्हार।
राखी जो ले आई है, यादों के उपहार।

अंकित शर्मा

*****

बारिश में बच्चे

जैसे ही बारिश की नन्हीं बूंदें
झम झमा, झम -झम -झम
टप टपा, टप-टप -टप
मेघों से गिरती बरसती हैं
घर में बैठे सारे बच्चे
भावविभोर हो निकल पड़ते हैं।
छप छपा, छप-छप-छप
नन्हें कदम ताल पानी में करते हैं,
संगीत की स्वर लहरियां
नई नई रागों की इनमें ढूंढ़ते हैं।
बारिश में भीगते दौड़ते
तन मन से इन्दधनुषी हो जाते हैं
नन्हीं नन्हीं हथेलियों में
अमृत बूंदों को समेटना चाहते हैं,
बच्चे जानते हैं ये बात
जान है जहान है इन बूंदों में
सृष्टि का जीवन है इन बूंदों में,
बच्चों को सुकून मिलता है
बूंदों की नटखटी शरारतों में,
शामिल हो जाते हैं शरारतों में।
बूंदों का स्पर्श पाकर
आनंदित हो जाते हैं बच्चे
बच्चों की खिलखिलाहट
फूल बनकर बिखेरती है महक,
और जब रूठ जाते हैं देवता इन्द्र
तो मनाते हैं उन्हें
पुकारते हैं उन्हें,
पानी बाबा आ ... जे
काकड़ी भुट्टा ला ... जे
बारिश में प्रार्थनारत रहते हैं
नन्हें -नन्हे बच्चे।

लाल बहादुर श्रीवास्तव

*****

स्वावलंबी

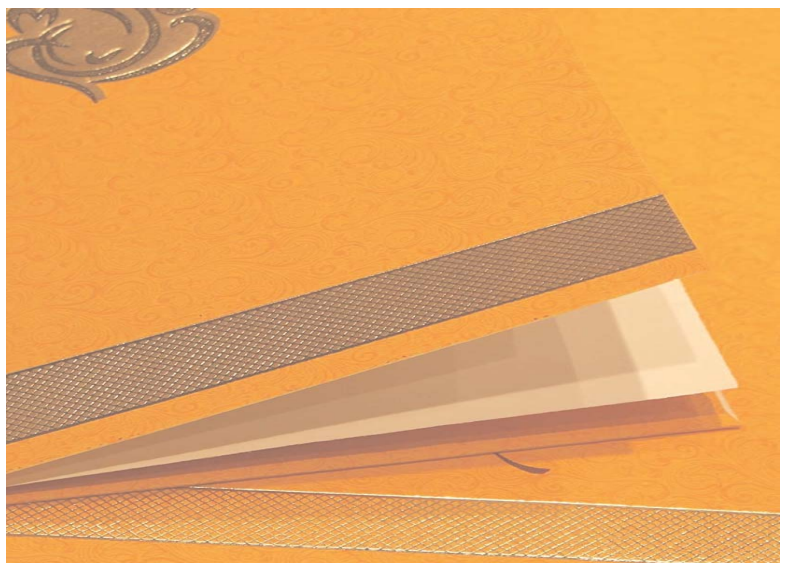

स्वावलंबी बन रच स्वदेश में
निर्माणों का विमल उजास
अपने हाथों का जादू रच
अपने पैरों कर विश्वास !!
अपनी धरती अपना पानी
अपनी पवन अपना आकाश
देश प्रेम की अग्निशिखा से
कर अपने पथ पर तू प्रकाश !!
प्रतिभा की है पुण्य पताका
श्रम का दिखे न पारावार
दृढ़ता से तुम रचो स्वर्ग निज
पा जाओ अनुपम अहसास !!
निजता की अनुभूति बनाती
संबल का अनुपम आकार
सदा सर्वजित रहे विश्व में
फिर क्यों भूले निज व्यवहार !!
आत्मशक्ति का मंत्र सुमिर ले
देश प्रेम की ले पतवार
बढ़ चल ये निर्माणी मन ले
रच ले आत्मजयी संसार !!

डॉ राजरानी शर्मा

*****

अब वो बात न रही

उम्र ढलती जा रही,
समय निकला जा रहा है।
दुनिया की फिक्र में इंसान,
अपने-अपनों को भूलता जा रहा है।
अंबर सा ये पहाड़ टूट रहा है,
हर कोई आज अपनों से रूठ रहा है।
प्रेम की बात में अब वो मिठास न रही
सुबह से शाम में वो रात न रही है।
भाई-भाई का पेट काट रहा है,
सब रामायण की बात छाट रहे है।
हर बात में पैसे का जहर है,
अब किसी के भी पास
राम-लक्ष्मण सा हृदय नहीं है।
श्रवण कुमार में अब वो बात नहीं,
न रहें वो माता-पिता के तीर्थ।
उम्मीदों का सूरज डूब रहा है,
अब रिश्तों में प्रेम के बोल मिट रहें है।
हर कोई अपनों का साथ छोड़ रहा है,
हर काई जहर के बोल, बोल रहा है।
अब दिल का दरवाजा बंद है,
हर ओर पत्थर की पक्की लकीर है,
हर कोई एक अदृष्य दीवार,
सामने लिए खड़ा है।

धनंजय कुमार

*****

राखी के धागों में नारी रक्षा के बीज

रक्षाबन्धन हिन्दूधर्म का प्रमुख सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक पर्व है। प्यार के धागों का यह एक ऐसा पर्व जो घर-घर मानवीय रिश्तों में नवीन ऊर्जा का संचार करता है। रक्षा का अर्थ है बचाव और मध्यकालीन भारत में जहां कुछ स्थानों पर महिलाएं असुरक्षित महसूस करती थी, वे पुरुषों को अपना भाई मानते हुए उनकी कलाई पर राखी बांधती थी। इस प्रकार राखी भाई और बहन के बीच प्यार के बंधन को मजबूत बनाती है तथा इस भावनात्मक बंधन को पुनर्जीवित करती है। राखी के धागों से भाई-बहन ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं का गहरा नाता रहा है।

ललित गर्ग

पर्व को सादगी से मनाने की बजाय बहनें अपनी सज-धज की चिंता और भाई से राखी के बहाने कुछ मिलने के लालच में ज्यादा लगी रहती हैं। भाई भी उसकी रक्षा और संकट हरने की प्रतिज्ञा लेने की बजाय जेब हल्की कर इतिश्री समझ लेता है। अब राखी में भाई-बहन के प्यार का वह ज्वार नहीं दिखायी देता जो शायद कभी रहा होगा। इसलिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा नहीं है।

रक्षाबन्धन प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। रक्षाबन्धन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्व है। सगे भाई बहन के अतिरिक्त अनेक भावनात्मक रिश्ते भी इस पर्व से बँधे होते हैं जो धर्म, जाति और देश की सीमाओं से परे हैं। सीमाओं पर जवानों को राखी बांधने का भी प्रचलन है, इस तरह रक्षाबन्धन आत्मीयता और स्नेह के बन्धन से रिश्तों को मजबूती प्रदान करने का पर्व है। यही कारण है कि इस पर्व के साथ न केवल बहन भाई के लिये अपितु अन्य रिश्तों एवं सम्बन्धों में प्रगाढ़ता, आत्मीयता एवं सौहार्द का सन्देश है। इस दिन ब्राह्मण अपने पवित्र जनेऊ बदलते हैं और एक बार पुनः धर्मग्रन्थों के अध्ययन के प्रति स्वयं को समर्पित करते हैं।

प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के उपदेश की पूर्णाहुति इसी दिन होती थी। भारत में प्राचीन काल में जब स्नातक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षासूत्र बाँधता था जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षासूत्र बाँधता था कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने भावी जीवन में उसका समुचित ढंग से प्रयोग करे ताकि वह अपने ज्ञान के साथ-साथ आचार्य की गरिमा की रक्षा करने में भी सफल हो। इसी परम्परा के अनुरूप आज भी किसी धार्मिक विधि विधान से पूर्व पुरोहित यजमान को रक्षासूत्र बाँधता है और यजमान पुरोहित को। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के सम्मान की रक्षा करने के लिये परस्पर एक-दूसरे को अपने बन्धन में बाँधते हैं। इसी दिन गुरु उन्नत शासन के लिये राजाओं के हाथों में रक्षासूत्र बाँधते थे। इसलिए आज भी इस दिन ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बाँधते हैं। प्रकृति भी जीवन की रक्षक हैं इसलिए रक्षाबंधन के दिन कई स्थानों पर वृक्षों को भी राखी बांधी जाती है। हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुरुष सदस्य परस्पर भाईचारे के लिये एक-दूसरे को भगवा रंग की राखी बाँधते हैं। यह सांस्कृतिक पर्व बहनों में उमंग और उत्साह को संचरित करता है, वे अपने प्यारे भाइयों के हाथ में राखी बांधने को आतुर होती हैं।

राखी का त्योहार कब शुरू हुआ इसे ठीक से कोई नहीं जानता। कहते हैं देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ तो दानव हावी होते नजर आने लगे। इससे इन्द्र बड़े परेशान हो गये। वे घबराकर वृहस्पति के पास गये। इन्द्र की व्यथा उनकी पत्नी इंद्राणी ने समझ ली थी। उसने रेशम का एक धागा मंत्रों की शक्ति से पवित्र कर इन्द्र के हाथ में बांध दिया। वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था। लोगों का विश्वास है कि इस युद्ध में इसी धागे की मंत्रशक्ति से इन्द्र की विजय हुई थी। हिंदू पुराण कथाओं के अनुसार, महाभारत में, पांडवों की पत्नी द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण की कलाई से बहते खून को रोकने के लिए अपनी साड़ी का किनारा फाड़ कर बांधा था। जिससे उन दोनों के बीच भाई और बहन का बंधन स्थापित हुआ था तथा श्रीकृष्ण ने उसकी जब जरूरत पड़ी रक्षा की।

पर्व को सादगी से मनाने की बजाय बहनें अपनी सज-धज की चिंता और भाई से राखी के बहाने कुछ मिलने के लालच में ज्यादा लगी रहती हैं। भाई भी उसकी रक्षा और संकट हरने की प्रतिज्ञा लेने की बजाय जेब हल्की कर इतिश्री समझ लेता है। अब राखी में भाई-बहन के प्यार का वह ज्वार नहीं दिखायी देता जो शायद कभी रहा होगा। इसलिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा नहीं है। लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है। बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता।

आज भ्रातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है। बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊंची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है। नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे। इन हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं। इस परम पावन पर्व पर भाइयों को ईमानदारी से पुनः अपनी बहन ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की कसम लेने की अपेक्षा है। तभी राखी का यह पर्व सार्थक बन पड़ेगा और भाई-बहन का प्यार शाश्वत रह पायेगा।

(लेखक पत्रकार, स्तंभकार हैं)

रक्षाबंधन में आकर्षक मेंहदी से सजाएं अपने हाथ

लोटस डिजाइन मेंहदी

आजकल ये डिजाइन बहुत चलन में है। लगाने में भी आसान है। आप स्वयं इन डिजाइनों को अपने हाथ पर लगा सकती है। देखने में यह मेंहदी बहुत ही आकर्षक लगती है साथ ही लगाने में भी काफी कम समय लगता है।

ऐरबिक मेहंदी

इस बार रक्षाबंधन पर मेहंदी लगवाने की प्लानिंग कर रही हैं तो हम आपको बता दें कि पूरे हाथ भरी हुई मेहंदी लगवाने की बजाए इस बार ऐरबिक मेहंदी ट्राई करें। ऐरबिक मेहंदी डिजाइन में पैटर्न थोड़े अलग-अलग और फैले हुए होते हैं। बिखरे-बिखरे डिजाइन होने से हाथ में खाली और भरापन दोनों दिखायी देता है जिससे हाथों की सुंदरता और भी बढ़ जाती है।

मारवाड़ी मेंहदी

मारवाड़ी मेंहदी भी देखने में बहुत आकर्षक लगती है। मारवाड़ी मेंहदी मोर, पान, राधाकृष्ण कई तहर के खास डिजाइन से बनाई जाती है। काफी बारीक और घनी लगाई जाती है।

बैंगल स्टाइल मेहंदी

इस स्टाइल में मेहंदी को सिर्फ हाथों में ही कलाईयों तक कुछ इस तरह लगाया जाता है जो देखने में बिल्कुल चूड़ी या बेल्ट जैसा दिखाई देता है। इस प्रकार की मेहंदी लगाने से हाथ खाली-खाली डिजाइन होने पर भी भरे हुए लगते हैं।

ज्वैलरी डिजाइन मेंहदी

हर किसी को पूरी तरह से भरी हुई मेंहदी पसंद नहीं होती है। अगर आप भी यह

प्रतिदिन न करें तले हुए भोज्य पदार्थों का सेवन

जंक फूड में अतिरिक्त मात्रा में कैलोरी होती है जो मोटापे का कारण बनती है, बच्चों को तो जंक फूड का बहुत ही कम मात्रा में सेवन करना चाहिए, इसका सेवन करने से बच्चे कम उम्र में ही मोटापे का शिकार हो जाते हैं। वहीं बच्चों के दिमाग पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, बच्चों की याददाश्त कम होने लगती है और उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

जंक फूड का ज्यादा सेवन करने वाले लोगों को अस्थमा और सांस लेने में तकलीफ जैसी बीमारियां होने का खतरा ज्यादा रहता है। लोगों को थकान रहती है और किसी भी काम में मन नहीं लगता है। इसके अलावा अनिंद्रा, डिप्रेशन, ब्लड प्रेशर और सिर में दर्द होना ये बीमारियां भी जंक फूड खाने वाले लोगों को ज्यादा होती हैं।

फुलबगिया

चित्र देखो, कहानी लिखो

बच्चो आपको यहां एक चित्र दिखाई दे रहा है। आपको इस चित्र को देखकर एक रोचक और प्रेरक कहानी लिखनी है। आपकी कहानी पसंद आने पर हम आने वाले अंक में कहानी को प्रकाशित करेंगे।

....तो बच्चो देर किस बात की। उठाइए पैन और कॉपी और हमें लिख भेजिए अपनी कहानी...

रोचक जानकारी

शुतुरमुर्ग की आंख उसके दिमाग से बड़ी होती है।

दुनिया के 85 प्रतिशत पौधे समुद्र के अंदर होते हैं।

पक्षियों को निगलने के लिए ग्रेविटी की जरूरत होती है।

बाल कविता

छम- छम बरसा पानी

अक्कड़- बक्कड़, बम्बे बोल।
बंद अकल का ताला खोल।।
छम- छमा-छम, बरसा पानी।
घर के अंदर से, बोली नानी । ।
नभ में गरजे, घन-घन बादल।
घुंघराले काले- काले से दल । ।
झिंगुर ने छेड़ा, गीतों का राग ।
मगन मयूर ने भी, छोड़ा बैराग। ।
फ़िर मेंढ़क बोला, टर्र- टर्र बानी ।
देखो, बड़े जोर से, बरसा पानी । ।

प्रभुनाथ शुक्ल

क्यों आती है बारिश के बाद मिटटी से भीनी खुशब

जब बारिश होती है और पानी की बूंदे मिट्टी पर पड़ती हैं तो मिट्टी से सौंधी-सौंधी की खुशबू आती है। लेकिन क्या आप जानते हैं ऐसा क्यों होता है। चलिए जानते हैं बारिश के बाद वायुमंडल में फैली हुई ओजोन गैस की मात्रा पानी में घुल जाती है। मिट्टी में अलग प्रकार का बैक्टीरिया होता है, जिसके कारण उससे महक आती है। बारिश की बूंदे पूरे वातावरण में फैल जाती है। कई वैज्ञानिकों का मानना है बारिश, पानी और मिट्टी कुछ इस प्रकार से क्रिया करते हैं जिसके कारण मिट्टी से खुशबू आने लगती है। मिट्टी में मौजूद निकार्डिया बैक्टीरिया धरती के गीले होने पर गैसोमाइन नाम का रसायन निकलता है जिसके कारण मिट्टी से खूशबू आने लगती है। इस प्रकार पौधों में मौजूद ऑयल और बैक्टीरिया के कारण बारिश के बाद मिट्टी से सौंधी-सौंधी खुशबू आती है।

जब पहली बार सूखी मिट्टी में पानी की बुंदे पड़ती हैं, तो एक भीनी-भीनी सी महक पूरे वायुमंडल में फैल जाती है, यह महक हर एक व्यक्ति को लुभावना लगता है। चाहे कुछ भी हो पर मिट्टी की खुशबू हर किसी को अच्छी लगती है।

बिंदु मिलाओ...

दीदी की पाती

प्यारे बच्चो

काल राखी का त्यौहार आने है और इसके लिए आपने पहले से तैयारी भी कर रखी होगी। वैसे तो राखी का त्यौहार अपने आप में खास होता है पर क्यूं न इसे और भी खास बनाया जाए। इसके लिए आपको ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं है। तो इस बार अपने भाई के लिए राखी स्वयं तैयार करें। हां आपको यह सब थोड़ा पुराना जरूर लगेगा लेकिन जब आप अपने भाई के हाथ पर अपने द्वारा बनाई हुई राखी बांधेंगी तो उसे निश्चित ही बहुत खुशी होगी वह इस राखी को सालों साल अपने पास संभालकर भी रखेंगे। वहीं भाई अपनी बहन के लिए उनसे एक वादा कर सकते हैं। जैसे प्रत्येक भाई बहन में झगते होते हैं बहुत सी आदतें होती है जो आपकी बहन को अच्छी नहीं लगती होंगी, वह आदत आप छोड़ सकते हैं या आपका फेवरेट गेम है वह आप अपनी बहन के साथ शेयर नहीं करते तो वह आप अपनी बहन को गिफ्ट में दे सकते हो। यह उपहार आपके भाई या बहन के लिए सबसे कीमती उपहारों में से एक होंगे। तो बच्चो देर किस बात की अभी जुट जाइए अपने काम में.... अंतिम और विशेष बात हमें अपनी पाती लिखना न भूलें...

आपकी दीदी.....

53 जयेंद्रगंज तारघर, ई-मेलः swadeshgwl@gmail.com

मीठा नीम

यूं तो चिंटू का घर छोटा सा था लेकिन चिंटू के माता-पिता ने अपने छोटे के घर के आंगन में बहुत सी सब्जियां और फूल और फल के पेड़ लगा रखे थे।

जो भी यहां से गुजरता चिंटू के घर की ओर देखकर प्रसन्न हो जाता।

चिंटू के माता-पिता दोनों पेड़-पौधों की अच्छी तरह देखरेख करते। उन्हें रोज पानी और समय-समय पर खाद देते।

एक दिन चिंटू के मित्र उसके घर आए। चिंटू के घर पर चारों तरफ हरियाली देखकर सबको अच्छा लगा। सब चिंटू से पेड़ पौधों के बारे में पुछने लगे चिंटू सभी मित्रों को बारी-बारी पेड़ों की जानकारी देने लगा। कुछ समय रुककर चिंटू के मित्र वापस अपने-अपने घर चले गए।

चिंटू का एक मित्र सोमू भी पेड़-पौधों से बहुत लगाव रखता था। वह भी चिंटू की तरह अपने घर पर तरह-तरह के पेड़ पौधे लगाना चाहता था। लेकिन जब भी अपने माता-पिता को पेड़-पौधे लगाने के लिए तो वह उसे मना कर देते और कहते कि अभी तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो.. जब तुम बड़े हो जाओ तो जितना मन करें उतने पौधे लगा लेना..। सोमू माता-पिता की बात सुनकर चुप हो जाता।

एक दिन सोमू चिंटू के घर गया। उसने चिंटू की मम्मी से कहा कि आंटी मैं भी आपकी तरह पेड़ पौधे लगाना चाहता हूं लेकिन मम्मी बोलती है कि जब तुम बड़े हो जाओ तब पौधे लगाना..। चिंटू की मां सोमू के मन की बात समझ रही थी। उन्होंने बाहर आगन में से एक मीठा नीम का पौधा उठाया और सोमू को दे दिया... और कहा कि बेटा सोमू यह ले जाकर अपनी मां को उपहार में देना और तुम इस पेड़ की हमेशा देखभाल करना। मीठा नीम का पौधा पाकर सोमू बहुत खुश हो गया। वह मीठा नीम का पौधा लेकर अपने घर आ गया... और मम्मी ..मम्मी जोरों से आवाज लगाने लगा। सोमू की आवाज सुनकर उसकी मां बाहर आईं सोमू ने बिना देर किए मीठा नीम का पौधा अपनी मां के हाथ में देकर कहा कि मां यह चिंटू की मम्मी ने आपके लिए दिया है। मीठा नीम का पौधा देखकर सोमू की मां बहुत खुश हुई वह बोली मैं कब से सोच रही थी कि मीठा नीम का पौधा घर में लगाने की..तुम्हें पता है सोमू यह सिर्फ पौधा ही नहीं खाने में भी इसकी पत्तीयों का उपयोग होता है.. ये खाने का स्वाद भी बढ़ाता है.. थैंक्यू बेटा.. आंटी को भी मेरी तरफ से थैक्यूं बोलना...।

सोमू की मम्मी ने पुराने पड़े गमले में मीठा नीम का पौधा लगाया और लेजाकर छत पर रख दिया.. वह मन सोचने लगी कि मैं मीठा नीम का पौधा पाकर इतना खुश हुई तो सोमू के लिए कुछ पौधे गमलों में ही लगा दिए जाए तो उसे भी कितनी खुशी होगी...।

अगले दिन सोमू की मां ने सोमू से कहा-सोमू जल्दी से तैयार हो जाओ हमें कहीं जाना है। सोमू मां के कहे अनुसार तैयार होगा। जैसे ही सोमू नर्सरी पर पहुंचा तो उसने अपनी मां से पुछा मां हम यहां क्यों आए हैं.. सोमू के मां ने उत्तर देते हुए कहा कि तुम्हें भी पेड़-पौधे पसंद है न तो अब यहां से तुम्हारे लिए कुछ पौधे खरीदेंगे... मां कि बात सुनकर सोमू बहुत खुश हुआ सोमू ने अपनी मां के साथ पौधे देखने में लग गया।

श्रेया गुप्ता

रंग भरो....

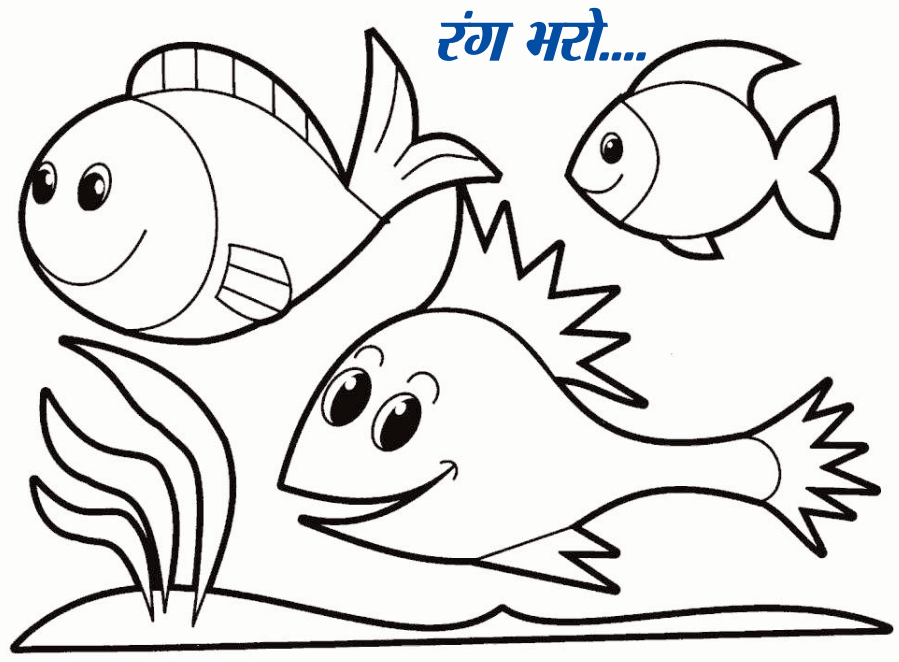

जो काम मुझे पसंद है, उसे करके मैं खुश हूं: वाणी

अभिनेत्री वाणी कपूर का कहना है कि वह बॉलीवुड में सबसे अधिक प्रासंगिक बने रहने का बोझ खुद पर नहीं रखतीं। वाणी ने बताया, अगर मैं इण्डस्ट्री में सबसे अधिक प्रासंगिक होने का बोझ रखती तो मैं वह वो सब नहीं कर पाती तो मैंने अपनी पसंद से किया।

अभिनेत्री ने 2013 में बॉलीवुड में अपनी पहली फिल्म 'शुद्ध देसी रोमांस' में एक छोटी सी लड़की का किरदार निभाकर प्रशंसा हासिल की थी। इसके बाद 'बेफिक्रे'(2016) और 'वॉर' (2019) में काम किया। उन्होंने कहा, मुझे जो पसंद है और जो मैं चाहती हूं, उसे करके मैं खुश हूं। ये मेरे फैसले हैं और मैं खुश हूं कि मुझे अपने लिए इन मौकों को चुनने का अवसर मिला।

वाणी के पास वर्तमान में 'शमशेरा' और 'बेल बॉटम' फिल्में हैं। रणबीर कपूर और संजय दत्त अभिनीत 'शमशेरा' 1800 के दशक की एक डकैती पर आधारित फिल्म है, जिसमें वाणी को एक नर्तकी के रूप में कॉस्ट किया गया है।

वहीं 'बेल बॉटम' में अक्षय कुमार, हुमा कुरैशी और लारा दत्ता भी हैं।

एथलीट की भूमिका में नजर आयेंगे आयुष्मान

बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना अपनी आने वाली फिल्म में एथलीट की भूमिका निभाते नजर आ सकते हैं।

आयुष्मान खुराना फिल्म निर्देशक अभिषेक कपूर के साथ एक फिल्म पर काम करने जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह फिल्म एक लव स्टोरी होगी जिसकी कहानी उत्तर भारत बेस्ड होगी। फिल्म की शूटिंग अक्टूबर से शुरू कर दी जाएगी। कहा जा रहा है कि इस फिल्म में आयुष्मान एथलीट की भूमिका निभाते नजर आ सकते हैं। हालांकि, फिल्म का नाम क्या होगा, इसकी एक्ट्रेस कौन होंगी इस बारे में अभी कोई जानकारी शेयर नहीं की गई है।

अभिषेक कपूर ने कहा, मैं और आयुष्मान हम दोनों एक खास तरह के सिनेमा के लिए जाने जाते हैं, और ये फिल्म यकीनन हम दोनों के लिए खास है। हम चाहते हैं कि दर्शक वापस सिनेमाघरों में आएं और ये फिल्में देखें। इस फिल्म को बनाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हम अपना बेस्ट देने की कोशिश करेंगे।''

जब श्रुति ने चलाया ट्रक

अभिनेत्री श्रुति हासन ने हाल ही में अपने द्वारा ट्रक चलाने के शानदार अनुभव को साझा किया और यह स्वीकार किया कि वह ड्राइवरों में सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं। श्रुति को अपनी आगामी डिजिटल फिल्म 'यारा' में एक दृश्य के लिए ट्रक चलाना पड़ा था और उसके बाद जो कुछ हुआ वह मजेदार था, जिसे उन्होंने साझा किया।

श्रुति ने कहा, बहुत से लोग यह नहीं जानते हैं, लेकिन मैं एक अच्छी ड्राइवर नहीं हूं।

वहीं उन्होंने घटना को याद करते हुए कहा, स्टंट टीम काफी मददगार थी और उनमें से एक मेरे पीछे क्लच और गियर शिफ्ट करने के लिए बैठा था। मैं वास्तव में उसे साधुवाद देती हूं, क्योंकि यह बिल्कुल भी आसान काम नहीं था' यह सच में मजेदार था, मैं एक पहाड़ पर ट्रक चलाने की कोशिश कर रही थी और वह भी उत्तराखंड की पहाड़ी सड़कों पर ट्रक चलाना एक कठिन काम था।

'यारा' में श्रुति के साथ विद्युत जामवाल, अमित साध, विजय वर्मा, केनी बासुमतारी और संजय मिश्रा हैं।

सरोज सुमन और गीतकार अमित त्यागी की जुगलबंदी

संगीतकार सरोज सुमन और गीतकार अमित त्यागी की जुगलबंदी इस समय श्रोताओं के लिए फायदे का सौदा बन गयी है। लॉक डाउन के दौरान दोहे और भारत का अफसाना जैसे शानदार नग़मे देने के बाद अब यह जोड़ी मन से बड़े बने लेकर आ रही है। सरोज सुमन के संगीत निर्देशन में यह गीत दिव्य स्वरूप लिए हैं। आध्यात्मिक चेतनाओं को झंकृत करके यह हृदय की संवेदनाओ को झकझोरता है। इस गीत के कुछ शब्द यूं हैं। दीन दुखी जो ग़म के मारे, हर लें हम उनके अंधियारे, आंसू पोंछे, दर्द को पीलें, कुछ तो कष्ट हरें, मन से बड़े बनें। गौरतलब है कि अमित त्यागी के लेख स्वदेश में भी समय समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। वहीं सरोज सुमन बॉलीवुड का चर्चित नाम है जिनके संगीत निर्देशन में सोनू निगम, अनुराधा पौंड़वाल, उदित नारायण, आदित्य नारायण, तोची रैना जैसे अनेकों बडे गायक गायन कर चुके हैं।

सरोज सुमन का गीत पर कहना है कि अमित त्यागी ने इस गीत के माध्यम से जयशंकर प्रसाद की लेखनी की ऊंचाइयों को स्पर्श किया है। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में जीवन और प्रेम के प्रति समरसता को प्रकाशित हुए कहा है कि संसार के द्वंदों का उद्गम शाश्वत सत्य है। फूल के साथ काँटे, भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दुख और रात्रि के साथ दिन, यह चक्र चलता रहता है। मानव जब इनमें से किसी एक को चुन लेता है और दूसरे को छोड़ देता है। यही उसके विषाद का कारण होता है।

गीत पर अमित त्यागी का कहना है कि अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य में भय के साथ संशय बना हुआ है किंतु ऐसे में भी लोगों के मन मे एक दूसरों के लिए कलुषित विचार होना समझ से परे हैं। सिर्फ लोगों के बीच ही नही बल्कि देशों के बीच भी इस गंभीर वातावरण के दौरान टकराव होना कहीं न कहीं मानसिकता को दिखाता है। धन संपदा की दौड़ और भोगवाद में हम शायद इतना अंदर तक घुस गए हैं कि मन की गहराई कम होती चली गयी। अब मानवता को धन से नही मन से बड़े होने की आवश्यकता है।

राधिका मदान हिंदी गाने से मिलती है प्रेरणा

बॉलीवुड अभिनेत्री राधिका मदान ने पुराने हिंदी गाने की ओर रुख किया। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर बुमरेंग साझा किया, जिसमें कैप्शन के रूप में पुराने हिंदी सांग का उपयोग किया गया है। राधिका ने अपने इंस्टाग्राम पर एक बुमरेंग साझा किया, जिसमें वह गोल्डेन ड्रेस में लुक देते नजर आ रही हैं।

राधिका ने 2001 की फिल्म 'अजनबी' के गाने 'कौन मैं हां तुम' से कैप्शन लिया। उन्होंने इसे कैप्शन देते हुए लिखा, 'कौन मैं' हां तुम।

इस महीने की शुरूआत में, राधिका ने सलमान खान की 1998 की सुपरहिट फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' के हिट गाने 'ओह ओह जाने जाना' की कुछ पंक्तियों को कैप्शन के रूप में उपयोग किया था।

अभिनेत्री को आखिरी बार 'अंग्रेजी मीडियम' में देखा गया था, जो लॉकडाउन से पहले की आखिरी बॉलीवुड रिलीज थी, और दिवंगत अभिनेता इरफान खान की अंतिम फिल्म भी थी। वह अगली बार अपने रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'शिद्दत' में दिखाई देंगी।

शॉर्टफिल्म संडे में छा रहे ग्वालियर के यतीन्द्र चर्तुवेदी

आकाशवाणी ग्वालियर के अधिकारी रहे यतीन्द्र चतुर्वेदी जी आवाज के जादूगर तो हैं ही इन दिनों अभिनय की पिच पर भी जमकर हाथ आजमा रहे हैं। पहले शार्ट फिल्म संझा से उन्होंने शुरुआत की और अब संडे शॉर्ट फिल्म से वे रंग जमा रहे हैं। यह फिल्म, इसका विषय और इसमें यतीन्द्र जी की अदाकारी खूब पसंद की जा रही है।

इस फिल्म में रिटायरमेंट के बाद जीवनसाथी के चले जाने के विछोह पर बात की गई है तो ललित के किरदार में यतीन्द्र चतुर्वेदी ने संदेश दिया है कि सुख के साथ दुख भी आते हैं मगर जीवन कभी खत्म नहीं होता। जीवन मूल्यवान है इसलिए इसे खुलकर जीना चाहिए। गम आ भी जाए तो हंसने और मुस्कुराने के मौके निरंतर तलाशने चाहिए।

यतीन्द्र चतुर्वेदी की की यह फिल्म स्वर्गीय संदीपन विमलकांत नागर जी ने साकार की है। वे फिल्म के निर्देशक के साथ पटकथा लेखक रहे हैं। संदीपन जी की फिल्म निर्माण की पारी काफी लंबी रहने वाली थी और यह तो केवल उनके फिल्म निर्माण की शुरुआत थी मगर काल पर किसी का वश नहीं चला। प्रख्यात फिल्म पटकथा लेखक डॉ. अचला नागर के पुत्र संदीपन विमलकांत बीच सफर से दुनिया से चले गए। संदीपनजी वरिष्ठ थियेटर कलाकार के थे। उन्होंने स्वास्तिक रंग मंडल मथुरा की जिम्मेदारी खूब जिम्मेदारी से निभाई एवं अनेक नाटकों का सफल मंचन किया। उन्होंने मथुरा में रहते हुए नाटक एवं रंगमंच को निरंतर समृद्ध किया। उनके भाई सिद्धार्थ नागर भी फिल्म लेखन के क्षेत्र में मुंबई में काम कर रहे हैं। मां अलका नागर की तो फिल्म जगत में राष्ट्रीय पहचान रही है। इसके बाबजूद स्वर्गीय संदीपनजी का मथुरा से मोह नहीं छूटा एवं वे मुंबई की जगह मथुरा में ही अपने रंगमंच एवं थियेटर के लिए डटे रहे। वे एक उत्कृष्ट अभिनेता थे। तिग्मांशु धूलिया ने जब मुरैना के एथलीट पान सिंह तोमर के बीहड़ में उतरने पर फिल्म बनाई तो हमें संदीपन जी भी इस फिल्म में दिखाई दिए। जब पान सिंह तोमर की जमीनी विवाद पर अपने चचेरे भाइयों के साथ पंचायत लगी थी तो गांव में कलेक्टर पहुंचे थे। कलेक्टर के उस किरदार में और कोई नहीं संदीपन विमकलकांत नागर ही थे। जिन्होंने कुछ मिनिटों के संवाद से ही फिल्म में अपनी छाप छोड़ दी थी। संदीपन जी ने अपने अपने मथुरा के पुराने मित्र यतीन्द्र चतुर्वेदी को पहले संझा फिल्म में भी मौका दिया था। यतीन्द्र बताते हैं कि श्रुति पुरी, संदीपनजी आदि के साथ यह फिल्म बुजुर्गों के अवसाद को सामने लाने के कारण चर्चा में रही। फिल्म में यतीन्द्र चतुर्वेदी बुजुर्ग मित्र को हौंसला देते दिखे थे। संडे इस प्रयास की अगली कड़ी है जो सकारात्मकता का संदेश देती है। इस फिल्म को बहुत ही रोचकता से फिल्माया गया है। फिल्म में हमें यतीन्द्र चतुर्वेदी के साथ श्रुति पूरी, राजेश श्रीवास्तव की शानदार अदाकारी के फिर से दीदार होंगे। नैनीताल और मथुरा में शूट हुई इस फिल्म में बेहतर अभिनय के लिए यतीन्द्र चतुर्वेदी जी और उसकी टीम को बारंबार बधाई।

यह फिल्म रिटायरमेंट के बाद जीवनसाथी के चले जाने के विछोह पर बात की गई है तो ललित के किरदार में यतीन्द्र चतुर्वेदी ने संदेश दिया है कि सुख के साथ दुख भी आते हैं मगर जीवन कभी खत्म नहीं होता। जीवन मूल्यवान है इसलिए इसे खुलकर जीना चाहिए। गम आ भी जाए तो हंसने और मुस्कुराने के मौके निरंतर तलाशने चाहिए। यतीन्द्र की की यह फिल्म स्वर्गीय संदीपन विमलकांत नागर जी ने साकार की है। वे फिल्म के निर्देशक के साथ पटकथा लेखक रहे हैं।

विवेक पाठक

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं

ई-मेल: vivek007pathak@gmail.com

8458980535

धीरज धूपर कलर्स के नागिन 5 में मुख्य भूमिका निभाएंगे

नागिन, भारतीय टेलीविजन पर सबसे सफल काल्पनिक कल्पना है, और अब इसका पाँचवाँ सीजन रिलीज होने वाला है। दर्शकों को यह जानने के लिए हमेशा उत्सुकता रहती है कि कौन से कलाकार शो में मुख्य भूमिकाओं में होंगे। इसलिए अब उनका इंतजार खत्म हो गया है, विनम्र और चतुर अभिनेता धीरज धूपर को शो के पांचवें संस्करण में मुख्य भूमिका निभाने के लिए तैयार किया गया है।

नागिन 5 में अपनी प्रमुख भूमिका के बारे में बात करते हुए धीरज धूपर ने कहा, यह मेरे लिए बहुत ही रोमांचक समय है। किसी भी अभिनेता का यह सपना होता है कि वह एक धरोहर की तरह समृद्ध विरासत के साथ शो में अभिनय करे और टेलीविजन पर एक शीर्ष शो हो। मैं इस शो का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं और मुझे यह पसंद है। यह एक प्रतिभागी होने के लिए रोमांचकारी है क्योंकि मैं पहले कभी इस तरह की भूमिका में नहीं रहा हूं। नागिन ने अविश्वसनीय वीएफएक्स का बहुत उपयोग किया है और यह अनुभव मेरे लिए नया है क्योंकि मैं इस तरह की भूमिका में पहले कभी नहीं था। एकता कपूर के साथ काम करना और फिर से कलर्स के साथ जुड़ना बहुत अच्छा होगा